नवीं कक्षा के विद्यार्थियों के समायोजन पर विद्यालय पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन

नीरज जोशी*
राजेश कुमार नट**

सन् 1962 में राष्ट्रीय महिला शिक्षा परिषद् ने विद्यालय स्तर पर बालक तथा बालिकाओं के पाठ्यक्रम में अंतर होने अथवा नहीं होने की महत्वपूर्ण समस्या पर विचार करने हेतु श्रीमती हंसा मेहता की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया। इस समिति ने कहा कि कोई भी ऐसा कदम नहीं उठाना चाहिए जो लड़कों तथा लड़कियों के बीच विद्यमान वर्तमान अंतर को बढ़ाए। इसी प्रकार कोठारी आयोग ने सुझाव दिया कि लड़कियों को अध्ययन के लिए लड़कों के विद्यालय में भेजने के लिए जनमत तैयार किया जाए। इसलिए प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता द्वारा विद्यालय पृष्ठभूमि का विद्यार्थियों के समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन किया गया। प्रस्तुत शोधकार्य के उद्देश्य थे: 1. नवीं कक्षा के विद्यार्थियों के समायोजन पर विद्यालय पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन करना। 2. नवीं कक्षा के विद्यार्थियों के समायोजन पर जेंडर के प्रभाव का अध्ययन करना। 3. नवीं कक्षा के सह-शिक्षा विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन पर जेंडर के प्रभाव का अध्ययन। प्रस्तुत शोधकार्य बिलासपुर जिले के बिल्हा ब्लॉक के शासकीय विद्यालयों के 150 विद्यार्थियों पर किया गया। उपकरण के रूप में ए.के.पी. सिंह की विद्यालय समायोजन सूची का प्रयोग किया गया। शोध परिणाम में नवीं कक्षा के विद्यार्थियों के समायोजन पर विद्यालय पृष्ठभूमि का सार्थक प्रभाव पाया गया तथा बालिकाओं का समायोजन, बालकों के समायोजन से अच्छा पाया गया।

औचित्य

किशोरावस्था में विद्यार्थियों को अनेक जटिल समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जैसे- अपनी आयु के बालकों और बालिकाओं से नये संबंध स्थापित करना, माता-पिता के नियंत्रण से मुक्त होकर स्वतंत्र जीवन व्यतीत करने की इच्छा

**असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, शिक्षा विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, एन.सी.ई.आर.टी., भोपाल (म.प्र.)
***शोधकर्ता*, शिक्षा विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

इत्यादि। विद्यार्थियों पर इस अवस्था में अपने शालेय वातावरण का भी प्रभाव पड़ता है।

हैडो कमेटी रिपोर्ट में कहा गया है- *"ग्यारह या बारह वर्ष की आयु में किशोरों की नसों में ज्वार उठना आरंभ हो जाता है, इसे किशोरावस्था के नाम से पुकारा जाता है, यदि इस ज्वार का समय रहते उपयोग कर लिया जाये और इसकी शक्ति तथा धारा के साथ-साथ नयी यात्रा आरंभ कर दी जाए तो सफलता प्राप्त की जा सकती है।"* अत: इस शोधकार्य द्वारा शालेय पृष्ठभूमि का विद्यार्थियों के समायोजन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाएगा ताकि विद्यालयों में ऐसी व्यवस्था की जा सके जिससे कि विद्यार्थियों के समयोजन में सुधार किया जा सकेगा।

पूर्व शोधकार्यों में समायोजन से संबंधित शोधकार्य में सुनीता (1986) ने अपने अध्ययन में पाया कि घर में लड़कियों का समायोजन लड़कों से बेहतर होता है तथा सामाजिक समायोजन लड़कियों की तुलना में लड़कों का बेहतर होता है। खेड़ा एवं सर्वजीत (1999) ने किशोरावस्था की सांवेगिक बुद्धि एवं समायोजन का अध्ययन किया जिसमें उन्होंने पाया कि सांवेगिक बुद्धि किशोरावस्था के विद्यार्थियों के समायोजन से परस्पर संबंधित है। मोहनराज (2005) ने समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि का गृह वातावरण के संदर्भ में अध्ययन किया और पाया कि गृह वातावरण समायोजन के साथ-साथ शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव डालता है। राजूपत (2008) ने आवासीय एवं गैर आवासीय बालिका विद्यालयों के शालेय वातावरण का अध्ययन किया जिसमें आवासीय विद्यालय का शालेय वातावरण उत्तम पाया गया। तिवारी एवं पांडे (2009) ने शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सामाजिक समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर नहीं पाया। उपरोक्त पूर्व शोध कार्यों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि समायोजन और विद्यालय पृष्ठभूमि (बालक विद्यालय/बालिका विद्यालय/ बालक-बालिका विद्यालय) से संबंधित कोई शोध कार्य नहीं हुआ है इसलिए पूर्व शोधकार्यों को ध्यान मे रखकर नवीं कक्षा के विद्यार्थियों के समायोजन पर विद्यालय पृष्ठभूमि के प्रभाव को लेकर शोधकार्य करने की आवश्यकता महसूस की गयी। प्रस्तुत शोध से प्राप्त जानकारी विद्यार्थियों के समायोजन में विद्यालय पृष्ठभूमि की भूमिका को समझने में सहायता करेगी।

समस्या कथन

"नवीं कक्षा के विद्यार्थियों के समायोजन पर विद्यालय पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन"

प्रयुक्त पदों की संक्रियात्मक परिभाषा

विद्यालय पृष्ठभूमि- प्रस्तुत शोधकार्य में विद्यालय पृष्ठभूमि से आशय बालकों का विद्यालय, बालिकाओं का विद्यालय एवं बालक-बालिकाओं के विद्यालय से है।

समायोजन- प्रस्तुत शोधकार्य में समायोजन से तात्पर्य सिन्हा एवं सिंह द्वारा निर्मित किए गए प्रमापीकृत समायोजन परीक्षण से प्राप्त परिणामों से है।

उद्देश्य-प्रस्तुत शोध के उद्देश्य निम्न प्रकार हैं-

1. नवीं कक्षा के विद्यार्थियों के समायोजन पर विद्यालय पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. नवीं कक्षा के विद्यार्थियों के समायोजन पर जेंडर के प्रभाव का अध्ययन करना।

3. नवीं कक्षा के बालक-बालिका विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन पर जेंडर के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ – प्रस्तुत शोध की शून्य परिकल्पाएँ निम्न प्रकार हैं-

1. नवीं कक्षा के विद्यार्थियों के समायोजन पर विद्यालय पृष्ठभूमि का सार्थक प्रभाव नहीं होगा।
2. नवीं कक्षा के विद्यार्थियों के समयोजन पर जेंडर का सार्थक प्रभाव नहीं होगा।
3. नवीं कक्षा के बालक-बालिका विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन पर जेंडर का सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

परिसीमन

1. प्रस्तुत शोधकार्य में बिलासपुर जिले के बिल्हा ब्लॉक के शासकीय बालक विद्यालय, शासकीय बालिका विद्यालय एवं शासकीय बालक-बालिका विद्यालय को शामिल किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शासकीय माध्यमिक बालक, बालिका एवं सह शिक्षा विद्यालयों के हिंदी माध्यम के नवीं कक्षा में अध्ययनरत् बालक व बालिकाओं जिनकी आयु 14 से 16 वर्ष है, को लिया गया है। इन विद्यार्थियों में शहरी व ग्रामीण दोनों क्षेत्रों के विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है। कुल न्यादर्श तालिका 1 के अनुसार लिया गया था।

न्यादर्श विधि

प्रस्तुत शोध में स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिले के बिल्हा ब्लॉक के शासकीय विद्यालयों का चयन किया गया। तत्पश्चात् इसमें शासकीय बालक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सरकंडा, शासकीय बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सरकंडा एवं शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, कोनी का चयन किया गया तथा इन विद्यालयों से नवीं कक्षा के विद्यार्थियों का चयन किया गया।

उपकरण

शोध में ए.के.पी. सिन्हा एवं आर.पी.सिंह की विद्यालय समायोजन सूची का प्रयोग किया गया।

प्रदत्तों का संकलन

प्रदत्तों के संकलन हेतु शोधकर्ता द्वारा सर्वप्रथम संबंधित विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों को अपने शोध के संबंध में पूरी जानकारी कराने के पश्चात् उनसे निवेदन करते हुए प्रदत्त संकलन करने की अनुमति ली गयी। अनुमति मिलने के पश्चात् नवीं कक्षा के विद्यार्थियों से तादात्मय स्थापित किया तथा उनको इस शोध की उपयोगिता बतायी गई। विद्यार्थियों से बताया गया कि इस शोध का उनके परीक्षा परिणाम पर कोई प्रभाव नही पड़ेगा। इसके पश्चात् विद्यार्थियों को समायोजन सूची से संबंधी

तालिका 1– विद्यालय एवं जेंडर के आधार पर विद्यार्थियों की संख्या

क्र.	विद्यालय का नाम	बालक	बालिकाएं	योग
1	शा. बा. उ. मा. वि., सरकंडा	50	–	50
2	शा. बालिका उ. मा. वि., सरकंडा	–	50	50
3	शा. उच्चतर माध्यमिक वि., कोनी	25	25	50
4	योग	75	75	150

निर्देश बताकर विद्यालय समायोजन सूची वितरित की गयी। शोधकर्ता विद्यार्थियों द्वारा समायोजन सूची पूर्ण रूप से भरने के पश्चात् एकत्रित की गयी।

प्रदत्तों का विश्लेषण

शोध हेतु प्राप्त प्रदत्तों का मध्यमान, मानक वचलन, "टी"-परीक्षण, एकमार्गीय प्रसरण विश्लेषण (एनोवा) के द्वारा विश्लेषण किया गया।

परिणाम

नवीं कक्षा के विद्यार्थियों के समायोजन पर विद्यालय पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन

प्रस्तुत शोध का पहला उद्देश्य है "नवीं कक्षा के विद्यार्थियों के समायोजन पर विद्यालय पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन करना" इस हेतु प्रदत्तों का विश्लेषण एकमार्गीय प्रसरण विश्लेषण (एनोवा) के द्वारा किया गया जिसका विवरण तालिका 2 में दिया गया है –

तालिका 2– विद्यार्थियों के समायोजन प्राप्तांकों हेतु एकमार्गीय प्रसरण विश्लेषण का विवरण

समूह	प्राप्तांकों का योग	df	माध्य वर्ग योग	F
बाह्य या मध्य वर्ग समूह	520.33	2	260.16	5.71*
आंतरिक वर्ग समूह	6688.66	147	45.50	
योग	7208.99	149	305.66	

* 0.01 सार्थकता स्तर

तालिका-2 से स्पष्ट है कि विद्यालय पृष्ठभूमि के लिए F = 5.71 है जो कि df (2, 147) पर सार्थकता के स्तर 0.01 स्तर पर सार्थक है। अत: शून्य परिकल्पना "नवीं कक्षा के विद्यार्थियों के समायोजन पर विद्यालय पृष्ठभूमि का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है" निरस्त की जाती है। अत: निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि नवीं कक्षा के विद्यार्थियों के समायोजन पर विद्यालय पृष्ठभूमि का सार्थक प्रभाव है।

इस उद्देश्य में विद्यालय पृष्ठभूमि के अंतर्गत तीन प्रकार के विद्यालयों को शामिल किया गया था, अत: इन तीनों प्रकार के विद्यालयों अर्थात् बालक विद्यालय, बालिका विद्यालय एवं बालक-बालिका विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन पर विद्यालय पृष्ठभूमि के प्रभाव की जाँच की गयी, जिसका विवरण तालिका 3 में दिया गया है। साथ ही तीनों प्रकार के विद्यालय समूहों के माध्यों के सार्थकता परीक्षण के लिए शैफी परीक्षण का प्रयोग किया गया जिसका विवरण तालिका 4 में दिया गया है -

तालिका 3 – विद्यार्थियों के समायोजन पर विद्यालय पृष्ठभूमि के प्रभाव हेतु प्राप्तांकों का मध्यमान एवं मानक विचलन का विवरण

विद्यालय का प्रकार	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
बालिका विद्यालय	50	13.96	6.90
बालक विद्यालय	50	18.46	7.40
बालक-बालिका विद्यालय	50	15.56	5.82
योग	150	15.99	6.95

तालिका 4 – विद्यार्थियों के समायोजन पर विद्यालय पृष्ठभूमि के प्रभाव हेतु प्राप्तांकों के मध्यमानों में अंतर का विवरण

विद्यालय	मध्यमानों का अंतर
बालिका विद्यालय-बालक विद्यालय	4.50*
बालिका विद्यालय-बालक-बालिका विद्यालय	1.60
बालक विद्यालय-बालक-बालिका विद्यालय	2.90

* 0.01 सार्थकता स्तर

तालिका 3 और 4 से स्पष्ट है कि –

(i) विद्यार्थियों के समायोजन पर विद्यालय पृष्ठभूमि के प्रभाव हेतु बालिका विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों का माध्य 13.96 एवं मानक विचलन 6.90 है, इसी प्रकार बालक विद्यालय में अध्ययनरत् बालकों का माध्य 18.46 और मानक विचलन 7.40 है। साथ ही यह भी ज्ञात होता है कि बालक विद्यालय और बालिका विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन प्राप्तांकों में सार्थक अंतर है जो कि सार्थकता के स्तर 0.01 स्तर पर सार्थक है। अत: शून्य परिकल्पना कि "बालक विद्यालय और बालिका विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं होगा" निरस्त की जाती है। अत: बालक विद्यालय में अध्ययनरत् बालकों के समायोजन प्राप्तांकों का माध्य, बालिका विद्यालय में अध्ययनरत् बालिकाओं के समायोजन प्राप्तांकों के माध्य से अधिक पाया गया तथा माध्य अंतर 4.50 पाया गया है। अर्थात् बालिका विद्यालय और बालक विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अंतर है। अत: **निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि बालिका विद्यालय में अध्ययनरत् बालिकाओं का समायोजन बालक विद्यालय में अध्ययनरत् बालकों के समायोजन से सार्थक रूप से उच्च पाया गया।**

(ii) विद्यार्थियों के समायोजन पर विद्यालय पृष्ठभूमि के प्रभाव हेतु बालिका विद्यालय में अध्ययनरत् बालिकाओं का माध्य 13.96 एवं मानक विचलन 6.90 है, इसी प्रकार बालक-बालिका विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों का माध्य 15.56 तथा मानक विचलन 5.82 है। साथ ही यह भी ज्ञात होता है कि बालिका विद्यालय एवं बालक-बालिका विद्यालय के माध्य समायोजन प्राप्तांकों में सार्थक अंतर नहीं है। अत: शून्य परिकल्पना कि ''बालिका विद्यालय और बालक-बालिका विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं होगा'' स्वीकृत की जाती है। साथ ही बालिका विद्यालय में अध्ययनरत् बालिकाओं के माध्य समायोजन प्राप्तांकों और बालक-बालिका विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के माध्य समायोजन प्राप्तांकों में लगभग समानता पायी गई तथा माध्य अतंर 1.60 पाया गया है। अत: यह कहा जा सकता है कि बालिका विद्यालय की बालिकाओं एवं बालक-बालिका विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है।

(iii) विद्यार्थियों के समायोजन पर विद्यालय पृष्ठभूमि के प्रभाव हेतु बालक विद्यालय में अध्ययनरत् बालकों का माध्य 18.46 और मानक विचलन 7.40 है। इसी प्रकार बालक-बालिका विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों का माध्य 15.56 तथा मानक विचलन 5.82 है। साथ ही यह भी ज्ञात होता है कि बालक विद्यालय और बालक-बालिका विद्यालय के माध्य समायोजन प्राप्तांकों में सार्थक

अंतर नहीं है। अत: शून्य परिकल्पना कि ''बालक विद्यालय और बालक-बालिका विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अंतर नही होगा'' स्वीकृत की जाती है। साथ ही बालक विद्यालय में अध्ययनरत् बालकों के माध्य समायोजन प्राप्तांक और बालक-बालिका विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के माध्य समायोजन प्राप्तांकों में लगभग समानता पाई गई तथा माध्य अंतर 2.90 पाया गया है। निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि बालक विद्यालय के बालकों और बालक-बालिका विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है।

नवीं कक्षा के विद्यार्थियों के समायोजन पर जेंडर के प्रभाव का अध्ययन

प्रस्तुत शोध का दूसरा उद्देश्य है "नवीं कक्षा के विद्यार्थियों के समायोजन पर जेंडर के प्रभाव का अध्ययन करना।" इस हेतु प्रदत्तों का विश्लेषण "टी"-परीक्षण द्वारा किया गया जिसका विवरण तालिका 5 में दिया गया है–

तालिका 5 – विद्यार्थियों के समायोजन पर जेंडर के प्रभाव हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं ''टी''-परीक्षण का विवरण

जेंडर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	df	t
बालक	75	17.45	7.10	148	2.62*
बलिका	75	14.53	6.52		

* 0.01 सार्थकता स्तर

तालिका 5 से स्पष्ट है कि जेंडर के लिए $t = 2.62$ है जो $df = 148$ पर सार्थकता के स्तर 0.01 पर सार्थक है। अत: शून्य परिकल्पना "नवीं कक्षा के विद्यार्थियों के समायोजन पर जेंडर का कोई सार्थक प्रभाव नही होगा" निरस्त की जाती है। अर्थात् नवीं कक्षा के विद्यार्थियों के समायोजन पर जेंडर का सार्थक प्रभाव है। बालकों के समायोजन का माध्य प्राप्तांक 17.45 और मानक विचलन 7.10 एवं बालिकाओं का माध्य प्राप्तांक 14.53 और मानक विचलन 6.52 पाया गया। चूँकि बालकों के समायोजन का माध्य प्राप्तांक, बालिकाओं के समायोजन के माध्य प्राप्तांकों से अधिक पाया गया। अत: निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि बालिकाओं का समायोजन बालकों के समायोजन से अच्छा है।

नवीं कक्षा के बालक-बालिका विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन पर जेंडर के प्रभाव का अध्ययन

प्रस्तुत शोध का तीसरा उद्देश्य है "नवीं कक्षा के बालक-बालिका विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन पर जेंडर के प्रभाव का अध्ययन करना।" इस हेतु प्रदत्तों का विश्लेषण "टी"-परीक्षण द्वारा किया गया जिसका विवरण तालिका 6 में दिया गया है –

तालिका 6 – बालक-बालिका विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन पर जेंडर के प्रभाव हेतु ''टी''-परीक्षण का विवरण

जेंडर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	df	t
बालक	25	15.68	6.10	48	0.30
बलिका	25	15.44	5.65		

तालिका 6 से स्पष्ट है कि बालक-बालिका (सहशिक्षा) विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन बालकों का मध्यमान 15.68 एवं मानक विचलन 6.10 है तथा बालिकाओं का मध्यमान 15.44

एवं मानक विचलन 5.65 है। जेंडर के लिए tcal = 0.30 है जो कि df = 48 पर, सार्थकता के स्तर 0.05 पर सार्थक नहीं है। अत: शून्य परिकल्पना कि "नवीं कक्षा के बालक-बालिका विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन पर जेंडर का सार्थक प्रभाव नहीं होगा" स्वीकृत की जाती है। अत: कहा जा सकता है कि नवीं कक्षा के बालक-बालिका विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन पर जेंडर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है। अर्थात् बालक एवं बालिकाओं को एक साथ पढ़ाये जाने पर उनके समायोजन में सार्थक अंतर नहीं होता है।

निष्कर्ष

1. नवीं कक्षा के विद्यार्थियों के समायोजन पर विद्यालय पृष्ठभूमि का सार्थक प्रभाव पाया गया। बालिका विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं और बालक- बालिका विद्यालय में अध्ययनरत् बालकों का समायोजन, बालक विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन से अच्छा पाया गया।
2. नवीं कक्षा के विद्यार्थियों के समायोजन पर जेंडर का सार्थक प्रभाव पाया गया। बालिकाओं का समायोजन, बालकों के समायोजन से अच्छा पाया गया।
3. नवीं कक्षा के बालक-बालिका विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन पर जेंडर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

चर्चा

प्रस्तुत शोध में पाया गया कि बालिका विद्यालय में अध्ययनरत् बालिकाएँ एवं बालक-बालिका विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थी अच्छी तरह से समायोजित हो जाते हैं, इन पर जेंडर एवं विद्यालय पृष्ठभूमि का प्रभाव नहीं होता है, तथा बालक विद्यालय में अध्ययनरत् बालक अच्छी तरह से समायोजित नहीं हो पाते हैं, इन पर जेंडर एवं विद्यालय पृष्ठभूमि का प्रभाव पड़ता है। अत: कहा जा सकता है कि बालिकाओं का समायोजन अच्छा होता है, तथा जो बालक सहशिक्षा में अध्ययन करते हैं उनका समायोजन भी अच्छा होता है। इस प्रकार सहशिक्षा में अध्ययन कर रहे विद्यार्थियों के समायोजन पर जेंडर एवं विद्यालय पृष्ठभूमि का प्रभाव नहीं पाया गया। अत: कहा जा सकता है कि बालक-बालिकाओं को सहशिक्षा में अध्ययन कराने से उनका समायोजन अच्छा रहता है।

संदर्भ

कृष्णा, के. पी. 1973. "व्यक्तित्व और जोखिम लेने का व्यवहार - एक अध्ययन", *थर्ड सर्वे ऑफ़ रिसर्च इन एजुकेशन.* एन.सी.ई.आर.टी.-1978-83, नयी दिल्ली, पृ. 368-369

खेड़ा, वी., एवं सर्वजीत. 1999. *किशोरावस्था की सांवेगिक बुद्धि एवं समायोजन का अध्ययन.* अप्रकाशित एम. एड. लघुशोध प्रबंध, पंजाब विश्वविद्यालय, चंड़ीगढ़

गुड, सी.वी. 1959. "वातावरण एवं व्यक्तित्व के समायोजन का अध्ययन", *डिक्शनरी ऑफ़ एजुकेशन.* एम.सी. ग्रेव, हिल बुक कंपनी, न्यूयार्क, पृ. 6

गैरेट, ई. हेनरी. 2008. *शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकीय.* सुरजीत प्रकाशन, 7-के, कोलापुर रोड, कमला नगर, दिल्ली-110007

तिवारी, एस., एवं पांडे, आर. 2009. "विद्यार्थियों में समायोजन क्षमता का अध्ययन एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण", *भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका.* वर्ष-28 (1), एन.सी.ई.आर.टी, नयी दिल्ली, जनवरी-जून 2009, पृ. 111

दासगुप्ता, ए. 1986. *अन इन्वेस्टिगेशन इन्टू दी ऑर्गेनाइजेशन ऑफ़ स्टूडेंट एक्टिविटीज़ एण्ड देयर रिलेशनशिप विद पर्सनॉलिटी केरेक्टरस्टिक्स ऑफ़ सेकण्डरी प्यूपिल्स इन नागालैण्ड.* फोर्थ सर्वे ऑफ़ रिसर्च इन एजुकेशन वाल्यूम-I, एन.सी.ई.आर.टी, नयी दिल्ली, 1983-88, पृ. 359

बेस्ट, जे. डब्ल्यू. एवं काहन, जे. वी. 2010. *शिक्षा में अनुसंधान.* पीएचआई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, नयी दिल्ली

मोहनराज. 2005. *समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि का गृह वातावरण के संदर्भ में अध्ययन.* www.detain mini.com.

राजपूत, डी. 2007-08. *आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालय के शालेय वातावरण का बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन.* अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर

सुनीता. 1986. *सामाजिक व सांवेगिक समायोजन का अध्ययन.* अप्रकाशित डॉक्टोरल डिज़र्टेशन, कुमायूँ विश्वविद्यालय, अलमोड़ा